... उनको पत्र अवश्य मिल जाता था।

कक्षा — आठवीं, विषय - हिन्दी रीडर
पाठ 6

प्र०1 = कवि ने पक्षी और बादल को भगवान के डाकिए क्यों बताया है? स्पष्ट कीजिए।

उ० = कवि ने पक्षी और बादल को भगवान के डाकिए इसलिए कहा है क्योंकि जिस प्रकार से डाकिए घर-घर जाकर संदेश पहुँचाने का कार्य करते हैं, उसी प्रकार से पक्षी और बादल भगवान का संदेश हम तक पहुँचाते हैं। उनके लाए हुए संदेश को भले ही हम न समझ पाए परंतु पेड़-पौधे, पानी और पहाड़ उसे भली प्रकार से पढ़ और समझ लेते हैं। ये डाकिए प्रेम और सद्भावना का संदेश लाते हैं। जिस प्रकार से बादल और पक्षी दूसरे देशों में जाकर भी किसी प्रकार का भेदभाव नहीं करते हैं उसी प्रकार हमें भी दूसरे व्यक्तियों के साथ किसी भी प्रकार का भेदभाव नहीं करना चाहिए।

प्र०2 = पक्षी और बादल द्वारा लाई गई चिट्ठियों को कौन-कौन पढ़ पाते हैं? सोचकर लिखिए।

उ० = पक्षी और बादल द्वारा लाई गई चिट्ठियाँ पेड़, पौधे, पानी और पहाड़ आसानी से पढ़ और समझ लेते हैं।

Scanned with CamScanner

Red Wings Page No. ___ Date ___/___/20___

प्र03 = किन पंक्तियों का भाव है :-
(क) पक्षी और बादल प्रेम, सद्भाव और एकता का संदेश एक देश से दूसरे देश को भेजते हैं।
उ0 = पक्षी और बादल, ये भगवान के डाकिए हैं, जो एक महादेश से दूसरे महादेश को जाते हैं। हम तो समझ नहीं पाते हैं, मगर उनकी लाई चिट्ठियाँ पेड़, पौधे, पानी और पहाड़ बाँचते हैं।

(ख) प्रकृति देश-देश से भेदभाव नहीं करती। एक देश से उठा बादल दूसरे देश में बरस जाता है।
उ0 = और एक देश का भाप दूसरे देश में पानी बनकर गिरता है।

~~प्र04= पक्षी और बादल की चिट्ठियों में आदान-प्रदान को आप किस दृष्टि से देख सकते हैं?~~

~~उ0 =~~
प्र04 = पक्षी और बादल की चिट्ठियों में पेड़-पौधे, पानी और पहाड़ क्या पढ़ पाते हैं?
उ0 = पक्षी और बादल की चिट्ठियों में पेड़-पौधे, पानी और पहाड़ भगवान द्वारा भेजा हुआ एकता, प्रेम, निःस्वार्थ और सद्भावना का संदेश पढ़ पाते हैं। भगवान के द्वारा बनाई गई इस दुनिया में मनुष्य, ने ही स्वंय को सरहदों और जातियों में बाँटा है। इसलिए ये चिट्ठियाँ वे नहीं पढ़ पाते। नदियाँ समान भाव से सभी लोगों में अपने पानी को बाँटती है, पहाड़ भी सभी के साथ खड़ा हुआ है। पेड़ - पौधे भी सभी व्यक्तियों के लिए समान भाव से फल, फूल, छाया, सब्जियाँ, औषधियाँ प्रदान करते हैं। इनके माध्यम से हमें यह संदेश मिलता है कि सभी के साथ हमें भी समान व्यवहार करना चाहिए।
प्र05 = एक देश की धरती दूसरे देश को सुगंध भेजती है - इस कथन का भाव स्पष्ट कीजिए।
उ0 = "एक देश की धरती दूसरे देश को सुगंध भेजती है" इस पंक्ति से कवि बताना चाहता है कि एक देश की धरती अपनी सुगंध व प्यार को पक्षियों के माध्यम से दूसरे देश को भेजकर सद्भावना का संदेश भेजती है। भाव इस प्रकार है कि जब एक जगह

Page No. ___ Date __/__/20__

की धरती अपनी भूमि में उगने वाले फूलों की सुगंध को पानी के बादलों के रूप में भेजते हुए नहीं झिझकती अर्थात भेदभाव नहीं करती बल्कि समान भाव से अपना प्रेम संदेश भेजती है। तो हम मनुष्य क्यों न समान भाव से रहें।

प्र०1= पक्षी और बादल की चिट्ठियों के आदान-प्रदान को आप किस दृष्टि से देख सकते हैं?

उ०= पक्षी और बादल की चिट्ठियों के आदान-प्रदान को हम प्रेम, विनम्रता और आपसी सद्भाव की दृष्टि से देख सकते हैं। मनुष्य इससे बहुत कुछ सीख सकता है। उसे आपस में प्रेम, सद्भावना और भाईचारा रखना चाहिए तथा सभी को समान रूप से देखना चाहिए और समानता का व्यवहार करना चाहिए।

प्र०2= आज विश्व में कहीं भी संवाद भेजने और पाने का एक बड़ा साधन इंटरनेट है। पक्षी और बादल की चिट्ठियों की तुलना इंटरनेट से करते हुए दस पंक्तियाँ लिखिए।

उ०= इंटरनेट एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति तक बात पहुँचाने का सरल तथा तेज माध्यम है। इसके द्वारा हम किसी भी व्यक्ति के विचारों को जान सकते हैं किन्तु पक्षी और बादल की चिट्ठियाँ हमें भगवान का संदेश देती हैं। पक्षी और बादल प्रकृति के अनुसार कार्य करती हैं किन्तु इंटरनेट व्यक्ति के अनुसार कार्य करते हैं। पक्षी और बादल की तुलना पर्यावरण को स्वच्छ एवं सुंदर रखने की होती पर इंटरनेट पर्यावरण को स्वच्छ एवं सुंदर नहीं करता। पक्षी और बादल का कार्य प्रकृति-प्रेमी को प्रभावित करता है। किंतु इंटरनेट विज्ञान को प्रभावित करती है।

प्र०3= हमारे जीवन में डाकिए की क्या भूमिका है? इस विषय पर दस वाक्य लिखिए।

उ०= हमारे जीवन में डाकिए की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। खाकी पैंट खाकी कमीज़ पहने, कंधे पर खाकी झोला लटकाए जब वह सामने गुजरता, तो उसकी ओर सबकी दृष्टि अचानक ही चली जाती है। ही अब कंप्यूटर और ई-मेल का युग है। पर, डाकिए का महत्व अभी भी उतना ही है जितना पहले था। डाकिया ग्रामीण जन जीवन का एक सम्मानित सदस्य माना जाता है।

Scanned with CamScanner

डाकिया केवल संदेश दाता नहीं, अर्थ दाता भी है। डाकिया का क
बड़ा कठिन होता है। वह सर्दी, गर्मी, बरसात का सामना करते
हुए समाज की सेवा करता है। कम वेतन पाकर भी वह अपन
परिश्रम से कार्य करता है।